THE BOOK WAS DRENCHED

प्रार्थना-सभाओं में गांधी जी के भाषण

दिल्ली, १२-६-४७ से २१-६-४७ तक

* *

अंक १

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
मिनिस्ट्री आफ़ इन्फार्मेशन ऐण्ड ब्राडकास्टिंग
गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया

*

मूल्द—चार आने

भूमिका

महात्मा गांधी की दिल्ली की प्रार्थना-सभाओं में दिये गये ७ भाषणों की यह पहली किस्त हम जनता के सामने उपस्थित कर रहे हैं। इसी प्रकार महात्मा जी के सारे भाषणों के संग्रह को निकालने का प्रबन्ध किया गया है।

महात्मा जी के सन्देश की जनता को आवश्यकता है यह कहने की बात नहीं। क्षुब्ध वातावरण को शान्त करने तथा जनता के हृदय में शान्ति स्थापित करने में ये भाषण निश्चय ही सहायक सिद्ध होंगे।

* *

१२ सितम्बर, १९४७

पहली बात तो मैं आपको यह कहना चाहता हूँ कि आज जो खबर मेरे पास सरहद्दी सूबे से आ गई है वह खतरनाक बात है। मेरा दिल तो उससे दुखी होता ही है। सरहद्दी सूबे में मैं काफी दिनों तक रहा हूँ। बादशाह खान मेरे साथ थे। डाक्टर खाँसाहब के घर पर रहता था। लीगवाले दोस्तों से मुहब्बत से मिलता था। जब मैं यह सुनता हूँ कि वहाँ अब तो कोई हिन्दू या सिक्ख आराम से नहीं रह सकता तो मुझे आश्चर्य होता है। हिन्दू और सिक्ख वहाँ काफी तादाद में थे लेकिन मुसलमानों के सामने उनकी तादाद छोटी ही थी। कितनी भी छोटी क्यों न हो, उससे क्या ? बात तो यह है कि एक भी मासूम बच्चा वहाँ रहे तो उसको भी सुरक्षित होना चाहिये।

जैसा मैं अपने लिये सोचता हूँ वैसा ही मैं आपको कह सकता हूँ कि हम कभी गुस्से में न आएं। दुःख मानना है तो मानें। हमारे दिल में हमारे दुःखी भाइयों के लिये दिलचस्पी होनी चाहिये, उनके लिये हमारे दिल में हमदर्दी होनी चाहिये। वे मारे जाते हैं तो हम मुसलमानों को क्यों न मारें, यह दिल में आ सकता है। लेकिन जिन्होंने हमारे भाइयों को मारा उन्हें तो मैं मार नहीं सकता। उनके बदले दूसरे बेगुनाहों को मारने की तैयारी करूँ ? जितनों को मार सकते हैं मारना, वहाँ जो हुआ उसका जितना हो सके बदला लेना, इसका नाम वैरभाव हुआ—मैं इस चीज़ को नहीं मानता कि कोई बुराई करता है तो उसका बदला बुरा बनकर लूँ। जो बुराई करता है, वह वहशियाना बात करता है, वह जंगली बन जाता है, मूर्ख बन जाता है, तो क्या मैं भी मूर्ख और जंगली बनूँ ? मेरे ही लोग मूर्ख बन गये, दीवाने बन गये तो क्या उनको मारूँ ? मैं आपको अपने बचपन की बात सुनाऊँ। उस वक्त मैं शायद दस वर्ष का था। [illegible]

बड़ा भाई बीमार पड़ गया। दीवाना सा बन गया। मगर सब ने उस पर दया ही की। उसके लिये डाक्टर बुलाया, यह बुलाया, वह बुलाया लेकिन जेलर को नहीं बुलाया। इसको कैद में भेज दो ऐसा नहीं कहा। यह दीवाना हो गया है, फौज बुलाओ ऐसा नहीं कहा, मेरा बाप सब कुछ कर सकता था। क्यों नहीं किया? वह उसका लड़का था। बाप कहता था, क्या लड़के को मार डालूँ? तो जैसे अपना लड़का है, भाई है, ऐसे मेरे सभी भाई हैं। मैं आपको कहूँगा कि हम ऐसा न कहें कि मुसलमान हमारे दुश्मन हैं। कितने मुसलमान मैं बता सकता हूँ जो मेरे दोस्त हैं। उनके घर में मैं रह सकता हूँ। वे मेरे घर में रहते हैं। उनके घर में मैं रहूँ तो वे मेरी बड़ी हिफाज़त करेंगे। चूँकि यहाँ हिन्दुस्तान में आज पाकिस्तान बन गया हिन्दुस्तान में जो सब मुसलमान हैं उन्हें काटना इन्सान का काम नहीं है। इसलिये मैं आपको यह सुनाता हूँ और आपकी मार्फत सब को। वहाँ की, पाकिस्तान की, हकूमत तो अपना काम भूल गई। कायदे आजम जिन्ना साहब जो पाकिस्तान के गवर्नर जनरल हैं, वहाँ के जो गवर्नर हैं, उनको मैं कहूँगा कि आप ऐसा न करें। जितनी बातें अखबार में आई हैं, अगर वे सही हैं, तो मैं उनसे कहूँगा कि वहाँ हिन्दू सिख आपकी सेवा के लिये ही पड़े हैं। आज वे क्यों डरते हैं? इसलिये कि उनको और उनकी बीवियों को मर जाना पड़ेगा, उनकी बीवियों को कोई उठा ले जायगा। उन्हें खतरा है सो वे भागते हैं। वहाँ की हकूमत में ऐसा क्यों? अपने लोगों को भी मैं कहना चाहता हूँ कि आप ऐसे जाहिल न बनें। यहाँ दिल्ली में हिन्दू-सिख कहें कि चूंकि पाकिस्तान में हिन्दू-सिख मुसीबत में पड़े हैं, वहाँ उन्हें बर्बाद कर दिया गया है, करोड़ों की जायदाद वहाँ छोड़ कर वे आये हैं, उसका बदला यहाँ लेंगे तो यह जहालत है। मैंने पाकिस्तान के हिन्दू-सिखों की दशा देखी है। मैं लाहौर में रहा हूँ। क्या मुझे दुःख नहीं होता? मेरा दावा है कि मेरा दुःख किसी पंजाबी के दुःख से कम नहीं। अगर कोई पंजाबी हिन्दू या सिख मुझे आकर कहेगा कि उसकी जलन ज्यादा है क्योंकि उसका भाई मर गया है, लड़की मर गयी है, बाप मर गया है, तो मैं कहूँगा, उसका भाई मेरा भाई है, उसकी लड़की मेरी लड़की है, उसकी माँ मेरी माँ है। मेरे दिल में भी उसके जितनी ही जलन है। मैं भी इन्सान हूँ। गुस्सा आ जाता है। पर उसे पी जाता हूँ। उससे मुझ में शक्ति पैदा होती है। उस शक्ति से क्या बदला लूँ? बदला कैसे लूँ कि वे खुद अपने गुनाह के लिये पश्चाताप करें। कहें हम से बड़ा गुनाह हो गया है। जो मुसलमानों ने वेस्ट पंजाब में किया है वह सब के सामने है। वे हिन्दू-सिख ऐसा करके मारें उससे क्या? लेकिन वे धर्म को मारते हैं, उसका

थे क्या करेंगे ? उसका जवाब वे किसको देने वाले हैं ? यह सब मैं जानता हूँ। लेकिन वे जाहिल बनते हैं इस लिये मैं यह कहूँ कि दिल्ली के हिन्दू दिल्ली के सिक्ख और जो कोई भी यहाँ बाहर से आये हैं वे जाहिल बनें ? मैं उम्मीद करता हूँ कि वे ऐसा नहीं करेंगे, ऐसे पागल नहीं बनेंगे, ताकि बाद में आने वाले यह कहें कि हमारे बाप-दादे—हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान सब ऐसे पागल बन गये कि उनको एक मोटी रोटी जिसका नाम आज़ादी था वह मिल गई, पर उसको वे हज़म नहीं कर सके, खा नहीं सके। उस रोटी को उन्होंने दरिया में फेंक दिया और ऐसा कहकर हम पर थूकें। मैं आपको कहता हूँ कि हम सावधान नहीं बन जाते हैं तो ऐसा ज़माना आ रहा है।

आज मैं जुमा मस्जिद में गया था। उनकी बीवियों को मिला। कोई रोती थी, कोई अपने बच्चे को मेरे पास लाती थी कि मेरा यह हाल है। इनको मैं क्या कहूँ ? कि वहाँ वेस्ट-पंजाब में हिन्दुओं का, सिक्खों का क्या हाल हुआ है, यह सब उनको जाकर सुनाऊं कि सरहदी सूबे में क्या हुआ वह सुनाऊं ? वह सब सुनाकर क्या करूं ? ऐसा करने से पंजाब के हिन्दू-सिखों का दर्द क्या मिट जायेगा ?

पाकिस्तान वाले जाहिल बने, उसके सामने हिन्दू और सिख भी जाहिल बन गये। तो एक जाहिल दूसरे जाहिल को क्या कहने वाला था ? इसलिये तो आपसे यह कहूँगा, आप सारे हिन्दू धर्म को सिक्ख धर्म को बचाने का काम करें। हिन्दुस्तान को और पाकिस्तान को, सारे देश को बचाने का काम करें। हम आखिर तक शरीफ़ रहें तो पाकिस्तान में मुसलमानों को शरीफ़ बनना ही है। यह दुनिया का कानून है। इस कानून को कोई बदल नहीं सकता। यह आपको एक बूढ़ा सुना रहा है, जिसने धर्म का काफ़ी अभ्यास किया है। हरेक का भला करने की कोशिश की है। ७८, ७९ वर्ष में मैंने काफी तजुर्बा लिया है। मैं कोई आँखें बन्द करके दुनिया में नहीं घूमा। बीस वर्ष तक हिन्दुस्तान के बाहर रहा हूँ। दक्षिण अफरीका जैसे जंगली मुल्क में जो हब्शी लोगों से भरा हुआ है, उनके बीच में मैं रहा और राम नाम नहीं भूला। राम का नाम याद रखता था और तभी तो मैं वहाँ रह सका। इसलिये मैं आपको अपने तजुर्बे से कह सकता हूँ कि हमारा काम नहीं है कि अगर किसी ने हमारे साथ बुरा किया हो तो हम उसका बुरा करके बदला लें। बुरे का बदला हम भला करके लें, यह सच्ची इन्सानियत है। जो भले के बदले भला करता है वह तो बनियाँ बन गया और झूठा बनियाँ। मैं कहता हूँ कि मैं बनियाँ हूँ मगर सच्चा। आप झूठे बनियाँ न बनें। सच्चा वह इन्सान है जो बुरे का बदला भले से करता है।

यह मैंने बचपन से सीखा और इतना तजुर्बा होने के बाद समझ सकता हूँ कि यह सच्ची बात है। तो मैं आपको कहता हूँ कि बुरे का बदला हम भले बन कर लें।

वे लोग मस्जिद में बेहाल पड़े थे। जुमे के रोज इतने इकट्ठे हो गये, तो नाटक करने के लिये नहीं। उन्होंने सुन लिया था मैंने कलकत्ते में मुसलमानों के लिये कुछ किया, बिहार में कुछ किया, नोग्राखाली में हिन्दुओं के लिए कुछ किया, सो उन्होंने सोचा, अच्छा वह आ गया है। अपने आप को सनातनी हिन्दू कहता है और इसलिए मुसलमान, सिख, पारसी और क्रिस्टी होने का भी दावा करता है। तो उससे पूछो तो सही कि हमारे लिए क्या करना चाहता है?

एक माता ने कहा मेरा बच्चा मर गया है, मैं क्या करूं? मैंने कहा माँ मैं तुझे क्या बताऊं? खुदा को याद कर, ईश्वर तेरा भला करेगा। बच्चा मर गया, सब मर गए तो क्या हुआ। तू भी तो इसी रास्ते पर जाने वाली है। छुरी से नहीं तो शायद कालरे से मर जायगी। तू हमेशा जिन्दा थोड़े ही रहने वाली है? इसलिये खुदा का नाम ले और हँस—रो कर क्या करेगी?

ऐसी घटनाएँ क्यों होती हैं? ऐसे हम जाहिल क्यों बनें? हम अपने धर्म को पहिचानें। उस धर्म के मुताबिक मैं सब लोगों को कहूँगा कि यह हमारा परम धर्म है कि हम किसी हिन्दू को पागल न बनने दें, किसी सिक्ख को पागल न बनने दें। मैं कहना चाहता हूँ कि सब मुसलमान जो अपनी अपनी जगहों से हट गये हैं, उन्हें वापिस भेजो। मेरी हिम्मत नहीं है कि मैं आज उन्हें भेजूं, मगर उन्हें वापिस भेजना है यह आप अपने दिल में रक्खें। मैं तो रखता हूँ। हमें शान्ति नहीं हो सकती है जब तक सब मुसलमान जिन जगहों से निकले हैं, वहीं फिर न चले जायँ। हाँ एक बात है। आज मुझे लोग सुनाते हैं कि मुसलमान आज तो अपने घरों में छुरा रखता है, गोला बारूद रखता है, मशीनगन रखता है—स्टेन-गन मैंने तो देखी भी नहीं है, वह सब रखता है। जैसे कि सब्जी-मंडी में। मैंने सब सुना है, देखा तो नहीं, लेकिन मैं सब मानने को तैयार हूँ। पर उससे हम क्यों डरें? मैं तो मुसलमानों को कहूँगा और दिल्ली में तो सबको कहता हूँ कि आप एक एलान निकालें और खुदा को हाजिर नाजिर जानकर, ईश्वर को साक्षी करके उसमें कहें कि पाकिस्तान में कुछ भी हो उस गुनाह के लिए हमको आप क्यों मारें? हम तो आपके दोस्त हैं। हम हिन्दुस्तान के हैं और रहेंगे। दिल्ली कोई छोटी नहीं है, देश की राजधानी है, पाये तख्त है। यहां बड़ी आलीशान जुमा मस्जिद पड़ी है, यहां फोर्ट भी है वह आपने नहीं बनायी है, मैंने नहीं बनायी है, हिन्दू ने नहीं बनायी है। वह तो

मुग़लों की बनायी हुई है जो हमारे ऊपर राज्य करते थे। वे तो यहां के बन गये थे, हमारे रीति-रिवाज सब चीज़ ले ली थी। मुसलमानों को आज हम कहें कि यहां से जाओ, नहीं तो हम तबाह कर देंगे तो क्या जुमा मस्जिद का कब्जा आप लेने वाले हैं ? और अगर हम कब्ज़ा लेते हैं तो उसके मानी क्या होते हैं ? आप समझें तो सही ! उस जुमा मस्जिद में क्या हम रहेंगे ? मैं तो यह कभी कबूल नहीं कर सकता। मुसलमानों को वहां जाने का हक होना ही चाहिये। वह उनकी चीज़ है। हमें भी उसका फख्र है। उसमें बड़ी कारीगरी भरी पड़ी है। हम क्या उसे ढा देंगे ? यह कभी नहीं हो सकता।

मुसलमानों से मेरा कहना है कि आप साफ़ दिल से कह दें कि आप हिन्दोस्तान के हैं। यूनियन के वफ़ादार हैं। अगर आप ईश्वर के वफ़ादार हैं और आपको इण्डियन यूनियन में रहना है तो आप हिन्दुओं के दुश्मन नहीं बन सकते। उनके साथ लड़ नहीं सकते आपको यह कहना है। पाकिस्तान में जो मुसलमान हिन्दुओं के दुश्मन बने पड़े हैं उन्हें सुनाना है कि आप पागल न बनें। अगर आप पागल बनेंगे तो हम आपका साथ नहीं दे सकते। हम तो यूनियन के वफ़ादार रहेंगे। इस तिरंगे झंडे को सलाम करेंगे। हुकूमत का जैसा हुक्म होगा, उसके मुताबिक हमें चलना है। वे सब मुसलमानों को कह दें कि जिनके पास मशीनगनें हैं गोला-बारूद है, वह सब हुकूमत को दे दें। हकूमत का यह धर्म है कि किसी को इसके लिये सज़ा न करे। ऐसा ही मैं कलकत्ते में करवाकर आया हूँ। कलकत्ते में मेरे पास काफ़ी हथियार लोगों ने जमा कर दिये थे। ज्यादा तो हिन्दुओं ने ही दिये थे। यहाँ मुसलमानों के पास हथियार हैं तो क्या हिन्दुओं के पास नहीं हैं ? मैं हिन्दू को तो कहता हूँ कि हथियार रखना ही न चाहिये। रखना है तो इसके लिये लाइसेंस होना चाहिये, उसके लिये परवाना होना चाहिये। पंजाब में कहते हैं कि सब को हथियार रखने का हक़ दे दिया है। मैं नहीं जानता कि पंजाब में क्या हो रहा है। अगर सबको हक़ है तो सब हथियार रक्खेंगे। उससे पंजाब का कोई भला नहीं होने वाला है। सबके पास हथियार रहेंगे तो आपस-आपस में लोग लड़ेंगे और एक दूसरे को मारेंगे। सब हथियार रक्खें और सब लड़ने वाले हो जायें तो तिजारत कौन करेगा ? क्या आपस में मारने का पेशा रह जायेगा ? इसलिये मैं कहूँगा कि अगर पंजाब में या पाकिस्तान में ऐसा है तो उसमें तबदीली करनी चाहिये और कहना चाहिये कि हथियार कोई न रक्खेगा, हथियार सब हुकूमत के पास रहेंगे। शहरी को हथियार की क्या जरूरत है, इसकी तो हुकूमत को

जरूरत है। कुछ भी हो, आज तो किसी शहरी के पास हथियार नहीं होना चाहिये। मैं कहूँगा कि जितने भी हथियार मुसलमान रखते हों, सब हथियार हुकूमत को दे देना चाहिये। हिन्दुओं को भी सब हथियार दे देना चाहिये। पीछे हिन्दू-सिक्ख मुसलमानों से कहें कि आप क्यों डरते हैं। हम आपसे नहीं डरेंगे और आप हमसे न डरें। बाहिर कुछ भी हो दिल्ली में तो हम भाई-भाई होकर रहेंगे। ऐसा कलकत्ते में भी हुआ और हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई होकर रहने लगे। बिहार में भी हिन्दू ऐसा करते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि दिल्ली में भी वही होगा जो कलकत्ते में हुआ। आप लोग जल्दी दिल्ली में वैसी हालत लायें जिससे मैं जल्दी पंजाब जा सकूँ और वहाँ जाकर कह सकूँ कि दिल्ली में मुसलमान शान्ति से रह रहे हैं। उसका बदला मैं वहाँ मांगूँगा। मेरे बदला मांगने की बात कैसी है, वह मैंने आपको समझा दिया और वही सच्चा बदला है। वह बदला मैं ममदोत साहब और वहाँ की हुकूमत से माँगूँगा। ईस्ट-पंजाबमें भी मैं चला जाऊँगा। वहाँ सिक्खों को, हिन्दुओ को डाटूंगा, उन्हें कड़ी सुनाऊंगा, क्योंकि मैं सबका खादिम हूँ, दोस्त हूँ। मैं सब मज़हब का हूँ, तो मुझे सबको कहने का हक है और मैं कहूँगा कि आप पागल क्यों बनते हैं। सिक्ख इतनी बहादुर कौम है। एक सिक्ख सवा लाख इन्सान से ज्यादा कहलाता है। वह क्या किसी कमज़ोर को मारेगा? मार कर क्या पाने वाला था?

मुसलमानों को चाहिये था पाकिस्तान, उन्हें मिल गया। पीछे क्यों लड़ते हैं, किनके साथ लड़ते हैं? क्या पाकिस्तान मिल गया तो सारा हिन्दोस्तान ले लेंगे? वह कभी होने वाला नहीं। क्यों वे कमजोर हिन्दू सिखों को मारते हैं? यह सब मैं उनको कहना चाहता हूँ। मैं तो अकेला हूँ। आपके पास हुकूमत पड़ी है, दोनों हुकूमतें आमने-सामने बातें करें कि उनके यहाँ जो अल्पमत—माइनारिटी—पड़ी है, उसकी रक्षा आपको करनी है। यहाँ जो हैं उनकी रक्षा हमें करनी है। यहाँ वे नहीं तो किस मुँह से जवाहरलाल कह सकता है, किस मुँह से सरदार पटेल कहने वाले हैं कि हम बराबर अल्पमत की हिफाजत करते हैं और यहाँ कोई मुसलमान लड़का ऐसा नहीं है, जिसको कोई छू सकता है या उस पर लाल आंखें निकाल सकता है। अगर कोई ऐसा मुसलमान है, जो पागल बन जाता है, अपने घर के अन्दर मशीनगन रखता है तो हम उसको सजा करेंगे, मारेंगे। लेकिन जो मुसलमान यहाँ वफादार होकर रहता है, उसे कोई छू नहीं सकता। ऐसे हालात आप पैदा करें कि जिससे जवाहरलाल ऐसा कह सकें, सरदार वल्लभ भाई ऐसा कह सकें

कि दिल्ली थोड़े दिनों के लिये पागल बन गयी थी, लेकिन दिल्ली शुद्ध बन गयी है। आज हिन्दू कहते हैं कि मुसलमान अगर हमारे बीच रहे तो मशीनगन चलायेंगे। हमारे पास मशीनगन नहीं हम क्या करें ? तो क्या हम मुसलमानों को मार डालें, या निकाल दें ? यह शराफ़त नहीं। हम इस तरह डरपोक न बनें।

मुसलमान भाइयों को मैं कहना चाहता हूँ कि उन्हें एक खासा स्टेटमेंट निकालना चाहिये। दिलों को बिल्कुल साफ़ कर लेना चाहिये। सिक्खों ने भी कुछ निकाला है, हिन्दुओं ने भी। दिल और दिमाग़ साफ हो जावें तो हम मेलजोल कर सकते हैं। आखिर दिल्ली की इतनी बड़ी तिजारत, इतनी खूबसूरत इमारतें, दिल्ली की तहज़ीब यह सब हिन्दू-मुसलमान दोनों की हैं, महज़ एक की नहीं।

★

१३ सितम्बर, १९४७

एक ज़माना था, शायद १५ की साल में, जब मैं दिल्ली में आया था, हकीम साहब को मिला और डाक्टर अन्सारी को। मुझको कहा गया कि हमारे दिल्ली के बादशाह अंग्रेज नहीं हैं, लेकिन ये हकीम साहब हैं। डाक्टर अन्सारी तो बड़े बुजुर्ग थे, बहुत बड़े सर्जन थे, वैद्य थे। वे भी हकीम साहब को जानते थे, उनके लिये उनके दिल में बहुत कद्र थी। हकीम साहब भी मुसलमान थे, लेकिन वे तो बहुत बड़े विद्वान थे, हकीम थे। यूनानी हकीम थे लेकिन आयुर्वेद का उन्होंने कुछ अभ्यास किया था। उनके वहाँ हजारों मुसलमान आते थे, और हजारों ग़रीब हिन्दू भी आते थे। साहूकार, धनिक मुसलमान और हिन्दू भी आते थे। एक दिन का एक हज़ार रुपया उनको देते थे। जहाँ तक मैं हकीम साहब को पहचानता था, उन्हें रुपये की पड़ी न थी, लेकिन सब की खिदमत की ख़ातिर उनका पेशा था। और वह तो बादशाह जैसे थे। आख़िर में उनके बाप-दादा तो चीन में रहते थे, चीन के मुसलमान थे, लेकिन बड़े शरीफ़ थे। हिन्दू लोग जितने मेरे पास आये, उनसे पूछा आपके सरदार यहाँ कौन हैं, श्रद्धानन्द जी? श्रद्धानन्द जी यहाँ बड़ा काम करते थे। लेकिन नहीं, दिल्ली के सरदार तो हकीम साहब थे। क्यों थे? क्योंकि उन्होंने हिन्दू-मुसलमान सब की सेवा ही की, खिदमत की। तो वह १५ के साल की बात मैंने कही। लेकिन बाद में मेरा ताल्लुक उनसे बहुत बढ़ गया और उनको और पहचाना—डाक्टर अन्सारी को पहचाना। डाक्टर अन्सारी के घर मैं काफ़ी दिनों तक रहा और उनकी लड़की ज़ोहरा और उनके दामाद शौकत खाँ को पहिचानता हूँ। सब भले हैं, आज भी यहाँ पड़े हैं, लेकिन दिल में रंज क्यों है? उनको आज डर लग गया है, क्या यहाँ कोई हिन्दू उनको भी मारेगा? उनके घर में तो वे रहते नहीं हैं। होटल में जाकर रहते हैं। इत्तिफ़ाक से बच गये हैं, उनका

दरबान हिन्दू था। उसने जो लोग आये थे उनको भगा दिया। तो ऐसे आज हम क्यों हैं? ऐसे पागल हिन्दू क्यों बने, सिक्ख क्यों बनें जिसका उनको डर लगे। आप मुझको कह सकते हैं, काफ़ी हिन्दू कहते हैं, गुस्से में आ जाते हैं, लाल आँख करते हैं कि तू तो बंगाल में पड़ा रहा, बिहार में पड़ा रहा, पंजाब में आकर देख तो सही, पंजाब में हिन्दुओं की क्या हालत मुसलमानों ने की है, सिक्खों की क्या हालत की है, लड़कियों की क्या हालत की है। मैं यह सब नहीं समझता हूँ, ऐसा तो नहीं है। लेकिन मैं उन दोनों चीजों को साथ-साथ रखना चाहता हूँ। वहाँ तो अत्याचार होता ही है। पर मेरा एक भाई पागल बने और सब को मार डाले तो मैं भी उनके सामने पागल बनूँ और मैं गुस्सा करूँ? यह कैसे हो सकता है? मेरे पास सब एक हैं, मेरे पास ऐसा नहीं है कि यह गाँधी हिन्दू है, इसलिये हिन्दुओं को ही देखेगा, मुसलमानों को नहीं। मैं कहता हूँ कि मैं हिन्दू हूँ और सच्चा हिन्दू हूँ और सनातनी हिन्दू हूँ। इसलिये मुसलमान भी हूँ, पारसी भी हूँ, कृष्टी भी हूँ, यहूदी भी हूँ। मेरे सामने तो सब एक ही वृक्ष की डालियाँ हैं। तो मैं किस डाली को पसन्द करूँ और मैं किस को छोड़ दूं। किस की पत्तियाँ मैं ले लूं और किस की पत्तियाँ मैं छोड़ दूं। सब एक हैं। ऐसा मैं बना हूँ। उसका मैं क्या करूं। सब लोग अगर मेरे जैसा समझने लगें तो पूरी शान्ति हो जाय।

आज मैं पुराने किले में गया। वहाँ मैंने हजारों मुसलमानों को देखा। और दूसरी मुसलमानों से भरी गाड़ियाँ किले की तरफ चली आ रही थीं। सारे मुसलमान आश्रित थे। किले में उनको रहना पड़ा, तो किस के डर से? आपके डर से, मेरे डर से? मैं जानता हूँ कि मैं तो नहीं डराता हूँ, लेकिन मेरे भाई डराते हैं, जो अपने को हिन्दू मानते हैं, जो अपने को सिक्ख मानते हैं। उन्होंने डराया सो मैंने डराया और आपने डराया। तो मुझ से तो बरदाश्त नहीं होता वे डर के मारे भाग कर पाकिस्तान में जायँ। पाकिस्तान में स्वर्ग है और यहाँ नरक है, ऐसा नहीं। हम इस नरक में क्यों पड़ें? मैं जानता हूँ कि न पाकिस्तान नरक है और न हिन्दुस्तान नरक है। हम चाहें तो उन्हें स्वर्ग बना सकते हैं, और अपने कामों से नरक भी बना सकते हैं। पाकिस्तान में मुसलमानों की बड़ी तादाद है, वे उसे नरक बना सकते हैं। हिन्दुस्तान में जहां हिन्दू बड़ी तादाद में हैं, हिन्दुस्तान को नरक बना सकते हैं। और जब दोनों नरक जैसे बन गये, तो उसमें फिर आज़ाद इन्सान तो नहीं रह सकता। पीछे हमारे नसीब में गुलामी ही लिखी है। यह चीज़ मुझको खा जाती है। मेरा हृदय कांप उठता है कि इस हालत में किस हिन्दू को समझाऊंगा,

किस सिक्ख को समझाऊंगा, किस मुसलमान को समझाऊंगा। किले में काफ़ी मुसलमान गुस्से में आ गये, दूसरों ने उन्हें रोका। यह भी मैंने देखा उनके दिलों में मोहब्बत थी, वह समझाते थे, रोकते थे, कहते थे कि यह बूढ़ा आया है, वह तो हमारी ख़िदमत करने आया है। हमारे आँसू हैं, उसको पोंछने के लिए आया है। हम भूखे हैं, तो देखने के लिये आया है कि उनको रोटी का टुकड़ा कहीं से मिल सके तो पहुँचाये, उनको पानी नहीं मिलता है, तो उनको पानी कहाँ से पहुँचाये। मुझे पता नहीं है कि वहाँ पानी मिलता है या रोटी मिलती है कि नहीं। किसी ने कहा कि हमारे पास रोटी नहीं है, पानी भी नहीं है। मैं तो देखने गया था। कोई शौक़ से थोड़े ही गया था, कोई मज़ा तो मुझे लेना नहीं था। कुछ लोगों ने मुझे बड़ी मोहब्बत से सुनाया। मुझे अच्छा लगा। घर-बार छोड़ना किसी को पसन्द नहीं आयेगा। जैसे वे वैसे आज हिन्दू आश्रित पड़े हैं, अपना घर छोड़ा, जायदाद छोड़ी, कोई मर गया और कोई यहाँ ज़िन्दा आ पड़े हैं। पीछे यहां खाना कहां है, पीना कहां है, घर कहां पड़ा है, कहीं भी पड़े रहते हैं। यह अच्छी बात नहीं है। सब के लिये शर्म की बात है। तो मैं तो इनको भी समझाता था। आप लोगों की मार्फत दूसरे जिनको मेरी आवाज पहुँच सके, उनको भी पहुँचाना चाहता हूँ। आपकी दिल्ली बड़ी आलीशान नगरी है, जिसमें वह पुराना किला है, वह तो इन्द्रप्रस्थ कहा जाता है। कहते हैं कि महाभारत के काल में पांडव यहां पुराने किले में रहते थे। इसको इन्द्रप्रस्थ कहें, दिल्ली कहें, यहाँ हिन्दू-मुसलमान दोनों इकट्ठा होकर पले। मुगलों की यह राजधानी थी। आज तो हिन्दोस्तान की है, मुगल बादशाह का तो कोई है नहीं। मुग़ल बाहर से आये थे। लेकिन उनका सब कुछ यहाँ देहली में था वे देहली के बने। उसमें से अन्सारी साहब भी बने, हकीम साहब भी बने और कहीं हिन्दू भी बने। हिन्दू ने भी उनकी नौकरी की। ऐसी आपकी इस दिल्ली में, हिन्दू-मुसलमान सब आराम से पड़े रहते थे। बाज़ दफा लड़ लेते थे। दो दिन के लिए लड़े पीछे एक बन गये। जिसमें एक दफा किसी कातिल ने, खूनी आदमी ने हमारे श्रद्धानन्द जी का खून किया, लेकिन उसके पहले मुसलमान श्रद्धानन्दजी को दिल्ली की जामा मस्जिद में मोहब्बत से ले गये थे और वहाँ उन्होंने भाषण दिया। यह है आपकी दिल्ली।

लेकिन आज क्या हो रहा है? सरदार ऊँचा सिर रख कर चलने वाला आज मैं आपको कहता हूँ कि उसका सिर नीचा हो गया है। वह जवाहरलाल, वह बहादुर जवाहरलाल, हवा में उड़ने वाला, किसी की परवाह न करनेवाला, आज

वह लाचार बन कर बैठ गया है। क्यों लाचार बना ? हमने उसको लाचार बनाया। अगर ऐसा ही रहता कि पश्चिमी पंजाब के मुसलमान दीवाने बन गये, वह भी ख़तरनाक बात है, नहीं बनना चाहिये। मगर एक पागल बने तो उसकी तो दवा हो सकती है, लेकिन सब पागल और दीवाने बनें तो कौन दवा करेगा ? वह जवाहरलाल कोई ईश्वर तो है नहीं। सरदार ईश्वर थोड़े ही है। दूसरे जो उनके मन्त्री पड़े हैं, वे ईश्वर तो हैं नहीं। उनके पास ईश्वरी ताकत तो कोई है नहीं। बाहर की ताकत, दुनिया की ताकत, भी कहाँ उनके पास पड़ी है ?

मैं तो बस यही बात सब को कहता हूँ। काफी हिन्दू आ गये, मुसलमान आ गये, उनसे काफी बहस की, लेकिन आख़िर में मेरी आवाज़ ईश्वर को जाती है। मैं कहता हूँ, मुझको यहाँ से उठा ले तू। नहीं तो दिल्ली में जो आज दीवाने बन गये हैं वे लड़ते हैं, उनको तू जैसे पहले थे वैसे बना दे। किसी हिन्दू के दिल में या सिक्ख के दिल में मुसलमानों के लिये गुस्सा न हो। मुझ को लोग सुनाते हैं कि मुसलमान, तो कहते हैं फ़िफ़्थ कालमिस्ट हैं, उसका मतलब है बेवफ़ा हैं आज जो हुकूमत है उसके प्रति वे बेवफ़ा हैं। साढ़े चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं। साढ़े चार करोड़ अगर बेवफ़ा बनते हैं तो उसमें खोएगा कौन ? उनको ही गँवाना है। वे इसलाम को गढ़े में डालेंगे। लेकिन हिन्दू और सिक्ख को वे खतरे में नहीं डाल सकते हैं। साढ़े चार करोड़ मुसलमान अगर ऐसी बदगुमानी करें कि हुकूमत की बेवफाई कर सकते हैं तो उनको गढ़े में पड़ना है, मगर साढ़े चार करोड़ मुसलमानों को आप न सतावें। मरना नहीं तो वे पाकिस्तान जायें ऐसा कहें, यह ठीक नहीं। क्यों जायें ? किसकी शरण में जायें ? मैं आपको कहता हूँ वे आपकी शरण में हैं, मेरी शरण में हैं। कम से कम मैं वह दृश्य देखना नहीं चाहता। मैं ईश्वर को यही कहूँगा कि उससे पहले तू मुझको यहाँ से उठा ले। काफ़ी दिन जिन्दा रखा है, कोई ७८, ७९ बरस कम नहीं हैं। मुझको पूरा सन्तोष है। जो मेरे से बन सकती है वह सेवा मैंने कर ली, लेकिन अगर ज़िन्दा रखना चाहता है तो मेरे पास से ऐसा काम ले जिससे मेरी आत्मा को सन्तोष पहुँचे। दोनों कहें तू दोनों का दोस्त है। इसलिये सब तेरी बात सुनते हैं और सुनेंगे। मैं काफी मुसलमानों के साथ बैठता हूँ, किसे कहूँ कि वह दग़ाबाज़ है और मुझको दग़ा दे रहा है! मैं कहता हूँ कि अगर वह दग़ा देता है, तो दग़ा किसी का सगा नहीं हो सकता।

मुसलमानों के पास काफ़ी हथियार पड़े हैं, यह मैं कुबूल करता हूँ। थोड़े तो मैंने ले लिये थोड़े से पड़े हैं तो क्या करेंगे ? मुझको मारेंगे ? आपको मारेंगे ?

ऐसा करें तो हुकूमत कहाँ गयी है। मैं आपको कहता हूँ कि अगर हम आज अच्छे बन जायें, शरीफ़ बन जायें तो हुकूमत को हमें इन्साफ़ दिलाना ही है। हुकूमतों को आपस-आपस में लड़ने दें, हम आपस-आपस में नहीं लड़ें, हम आपस-आपस में दोस्त ही रहें। हम डर न करें कि हमको मार डालेंगे। मारनेवाला कितना ही बलवान हो, मार नहीं सकता जब तक ईश्वर हमारी रक्षा करता है। इसलिये मैं कहता हूँ, दोनों से कहता हूँ, डर को छोड़ो। कायदे आज़म की बहस मुझे बुरी लगी। कहते हैं यूनियन में मुसलमानों को सताया गया, इसलिये उन्हें पाकिस्तान लाया जा रहा है, उनके लिये खाना चाहिये, जमीन चाहिये। पाकिस्तान गरीब है, इसलिये जिसके पास पैसे हैं वे पैसे भेज दें। मुझे उसकी शिकायत नहीं। मगर साथ ही वह क्यों नहीं कहते कि पश्चिमी पंजाब में हिन्दुओं पर क्या हुआ? बिहार ने बुराई की तो उसका कफ़्फ़ारा किया। कलकत्ते में हिन्दुओं ने आकर मेरे सामने पश्चाताप किया। ऐसे ही मुसलमान आकर कहें, हमने बुराई की, गल्ती की तो वह शराफ़त होगी। मैंने देख लिया है, मैं कैसे आँखें बन्द कर सकता हूँ। हिन्दू गुनाह करते हैं उसको भी छिपा नहीं सकता हूँ। इसी तरह कोई मुसलमान गुनाह करे तो उसे भी मैं नहीं छिपाऊँगा। छिपाऊँगा तो मैं इसलाम का बेवफ़ा बनूँगा। मैं उसका बेवफ़ा नहीं बनना चाहता। गुरु ग्रंथ का भी बेवफ़ा नहीं बनूँगा। मैं सब का वफ़ादार ही रहना चाहता हूँ। न मैं खुदा का बेवफ़ा बन सकता हूँ न इन्सान का। सब की तरफ़ वफ़ादारी करना चाहता हूँ।

मुसलमान सब बेवफ़ा होते हैं, ऐसा नहीं है। मैं काफ़ी मुसलमानों के बारे में कहने को तैयार हूँ कि वे बावफ़ा हैं। अगर बेवफ़ा होंगे तो ईश्वर उन्हें पूछेगा और वे अपने आप इसलाम को खतरा में डालेंगे। काफ़ी मुसलमानों ने इरादा किया, इसलिये मैंने कल कहा कि मुसलमानों का यह धर्म है कि जितने ख़ास-ख़ास लोग हैं वह कहें कि हम ऐसे निकम्मे नहीं हैं। हम हिन्दुस्तान के वफ़ादार हैं और रहेंगे; हिन्दुस्तान के लिये दुनियां से लड़ेंगे। तब तो वे सच्चे मुसलमान हैं नहीं तो वे बुरे मुसलमान हो जाते हैं। मेरी ऐसी उम्मीद है कि ऐसे बुरे मुसलमान हमारे यहाँ हिन्दुस्तान में हैं नहीं और अगर हैं तो उन्हें अच्छा करने के लिए हमको अच्छा बनना है बुरा नहीं।

★

१४ सितम्बर, १६४७

जैसे कल गया था वैसे आज भी मैं वहां चला गया था, जहाँ हमारे मुसलमान आश्रित लोग रहते हैं। वहां कैम्प में जो गन्दगी थी वैसी मैंने देखी नहीं। मैं हिन्दुओं के कैम्प में भी गया और मुसलमानों के कैम्प में भी गया। हिन्दुओं के कैम्प दूसरी जगह हैं। मुस्लिम कैम्पों में इतनी बदबू निकलती है, इतनी गन्दगी है, क्यों उसको नहीं साफ करते? अगर मैं उस कैम्प का कमांडर हूँ तो मैं तो उसे बरदाश्त नहीं करूँगा। मैं तो कैम्पों में रहा हूँ, मैंने कैम्प देखे हैं। कैम्प ऐसे गन्दे नहीं रह सकते। मुझको बड़ा रंज हुआ। इतने सिपाही बने हैं, इतनी मिलिटरी पड़ी है, तो वे इतनी गन्दगी क्यों बर्दाश्त करते हैं? वे कहेंगे कि सफाई करना हमारा काम कहां है। हमको तो बन्दूक चलाने का हुक्म है। यहां शान्ति रखने की हमारी ड्यूटी है। वे आपसमें लड़ते हैं तो हम उनको बन्दूक से साफ कर देते हैं। इतना ही हमको हुक्म है, हुक्म के बाहर हम नहीं जा सकते। ठीक है, लेकिन वह हमारी मिलिटरी है हमारे वे सिपाही हैं। मेरी निगाह है कि उनके हाथ में एक कुदाली भी होनी चाहिये। एक फावड़ा भी। कहीं भी गन्दगी हो उसे साफ करें। पहिले पहल उनका काम सफाई होना चाहिये। कैम्प को अगर अच्छा रखना है तो हमारे मुस्लिम और हिन्दू भाइयों को खुद वहां सफ़ाई रखनी है। जैसे वे पड़े हैं ऐसे ही पड़े रहें, उन्हें हम कुछ न कहें तो हम उनके दुश्मन बनते हैं। अगर हम उनके दोस्त हैं, उनके सेवक हैं तो हमें उन्हें साफ़ कहना है, आप यहां आये हैं, लाचार न बनें। अगर पाकिस्तान से हिन्दू शरणार्थी आ जायँ तो क्या उनको कुएं में डाल दें। क्या यहाँ रक्खें नहीं और देखभाल न करें। हम उनको ऐसा कहें कि आप दुखी हैं इसलिये आप को झाड़ू नहीं लगानी है। यह चलने वाला नहीं है। आपको सफ़ाई करनी है। हम आपको खाना भी देंगे पानी भी देंगे मगर भंगी नहीं देंगे। मैं तो बहुत कठिन हृदय का आदमी हूँ।

हरिद्वार में जब कुम्भ का मेला था तो मैंने कुदाली चलाई। हमारे पास वहाँ कैम्प सैनिटेशन के सब काम थे। वहाँ के जो कैम्प-कमांडर थे वे चार-पाँच आदमियों की टोली करके निकल जाते थे और सब काम करते थे और जितनी गन्दगी होती थी उसको साफ़ करते थे। इसके लिए सबको तालीम दी गई थी। तो मैं तो यह कहूँगा कि यहाँ के जो कैम्प के कमांडर हैं, कोई भी हों, मुसलमान हों, हिन्दू हों, मुझे परवाह नहीं है, उनका पहिला काम है अपने कैम्प को बिल्कुल साफ़ रखना। उसमें कोई पैसा तो खर्च नहीं होता। अगर कैम्प के पास फावड़े नहीं हैं हुकुमत का काम है कि वह उस चीज़ को सफाई करने के लिए दे। अगर नहीं देती उसके पास इतने काम पड़े हैं उसमें से उसे फुर्सत नहीं मिलती तो कमांडर को फावड़ा कहीं से पैदा करना है और लोगों को देना है। जिस तरह से हुकुमत का काम कैम्प में खाना पहुँचाने का है, उसी तरह से सफाई का इन्तजाम करने का है। पीने का पानी है और कपड़े साफ करने का पानी है, टट्टी पेशाब का पानी है। चूँकि उसकी निकासी का इन्तजाम नहीं होता इसलिए कौलरा हो जाता है। कभी कैम्प-सैनिटेशन अधूरा रहना ही नहीं चाहिये। मुझे कहना पड़ेगा कि यह चीज़ मैंने अंग्रेजों के पास से सीखी। मुझे पता नहीं था कि कैम्प-सैनिटेशन कैसे चलाया जा सकता है। किस तरह से हजारों लाखों आदमी रहते हैं उनको किस तरह से काम दें कि जिसमे वह सैनिटेशन का काम करें। और जो कुछ उनको काम करने को दिया जाय वह करें। मिलिटरी वाले यह सब करते हैं। मिनटों में सारा शहर खड़ा हो जाता है। तम्बू, डेरे लग जाते हैं। कैम्प का पहला काम यह है कि पहिली पार्टी जो पहुँच आती है, उसको पानी कहाँ है, यह देख लेना है। किस तरीके से पानी इस्तेमाल करें। दूसरी जो पार्टी है उसको ट्रेंचें खोदना है जिससे पेशाब व पाखाना बाहर न जा सके। जाहिर है, ऐसा करें तो पीछे वहाँ कौलरा नहीं हो सकता। डिसेन्ट्री नहीं हो सकती। वे आराम से रह सकते हैं। बाकी चीज़ों को मैं छोड़ देना चाहता हूँ। यहाँ तो अन्धाधुन्ध पड़े हैं। सब जैसे तैसे पड़े हैं। कैम्प को कोई साफ-सुथरा नहीं रखता।

मैं किसका गुनाह निकालूँ। मुस्लिम शरणार्थी कैम्प का जो कमांडर है वह मुस्लिम है। वह उनको कह सकता है, उनको समझा सकता है कि उनको यह करना है। उनको समझा कर काम लेना है। उनको कहा जाय तुम अगर ऐसे रहोगे तो तुम मर जाओगे। तुम्हारे बच्चे साफ-सुथरे नहीं रह सकते हैं, इससे बेहतर है कि कैम्प को साफ रखो। वहाँ हम सफाई सिखा दें तो बड़ा काम कर सकते हैं। हिन्दू के कैम्प देखें तो वहाँ भी मैला पड़ा रहना है और कचड़ा पड़ा रहता है मगर कुछ फर्क तो है।

नंगे पैर जाओ तो मैं तो वहाँ चल ही नहीं सकता। तालाब में कुछ पानी ही नहीं था सूखा पड़ा था। कहाँ से पानी निकले उसका इन्तज़ाम नहीं। आखिर में जानवर तो मुसलमान भी नहीं हैं, और हिन्दू भी नहीं। आज हम जानवर जैसे बन गये हैं। तो मुझको यह सब बड़ा बुरा लगा। पीछे मेरा ख्याल दूसरी चीज़ की तरफ चला गया। ऐसे तो हम हैं लेकिन ऐसे हम क्यों बनें ? क्यों पाकिस्तान से डर के मारे हिन्दू भागे, सिक्ख भागे। ठीक है, हिन्दू ने यहाँ कुछ बुरा किया। मगर वहाँ तो नहीं किया। पश्चिमी पंजाब में हिन्दू क्या बुरा करेंगे, सिक्ख क्या करेंगे ? उन्हें वहाँ से क्यों भागना पड़े ? किसी ने गुनाह किया है तो उसको सजा करो। यह तो हुकूमत का काम है। इसी तरह मैं कहूँगा कि किसी को यहाँ से भागना क्यों पड़े ? मुसलमान हैं तो क्या मुसलमान होने का गुनाह उसने किया है ? मुसलमान है तो भी हमारा है, हमारी हुकूमत में पड़ा है। उस मुसलमान को भागना क्यों पड़े ? वे शरणार्थी हैं तो खुली बात है कि यह दिल्ली के लिये शर्म की बात है। जो मुसलमान यहाँ पड़े हैं वे बाहर से नहीं आये हैं। लेकिन वे करीब-करीब सब यहाँ दिल्ली के मोहल्लों से आये हैं। थोड़े बाहर से आये होंगे। दिल्ली में से हमने उनको मारकर भगा दिया है। मैं आपको कहूँगा, कल भी सुनाया था, कि यह हमारे लिए तो बड़े शर्म की बात है। पीछे मेरा विचार चला कि हम दोनों पागल क्यों बने। पाकिस्तान की हुकूमत की यह कमजोरी है कि जो वहाँ के अल्पमत हैं उनको वहाँ से भागना पड़ा। वे उनकी रक्षा न कर सके, पाकिस्तान की हुकूमत उनकी रक्षा नहीं कर सकी, इसलिये उनको भागकर यहाँ आना पड़ा। पाकिस्तान की हुकूमत का फर्ज है कि उनकी मिन्नत करे कि भाई आप कहाँ जाते हैं, क्यों जाते हैं ? आपको कोई हलाक करता है तो हमको बताइये, हम उनको मारेंगे, जेल में भेजेंगे, सजा करेंगे। लेकिन आपको तो यहाँ रहना है। आज तो वहाँ ऐसा बन गया है कि शरीफ आदमी भी भाग रहे हैं। लाहौर खाली हो गया है। जिस लाहौर को हिन्दुओं ने बनाया। उस लाहौर में जहाँ हिन्दुओं के बड़े बड़े महलात मैंने देखे, इतनी तालीम की जगहें देखीं। इतने कालेज और कहाँ हैं ? मैं तो सबको पहिचानने वाला ठहरा। आज वे कालेज वगैरा किस के कब्जे में हैं ? यह सब बहुत बुरा लगता है और मुझको शर्म आती है कि पाकिस्तान की हुकूमत ऐसे कैसे बन सकती है। पीछे यहाँ देखता हूँ तो भी मुझको शर्म आती है कि हमारी हुकूमत होते हुये और ऐसा शेर जैसा जवाहर लाल होते हुए, ऐसे सरदार जी जैसे यहाँ होम मिनिस्टर होते हुए, दिल्ली क्यों बिगड़े और उनकी हुकूमत क्यों न चले ? उनका हुक्म निकले कि एक बच्चे को यहाँ रक्षित

खड़ा रहना है तो बच्चे को सुरक्षित रहना चाहिये। तब तो हमारी हुकूमत चली लेकिन आज तो उनके पास मिलिटरी पड़ी हुई है, पुलिस पड़ी हुई है, उसके मार्फत वे शान्ति करवा रहे हैं। लेकिन आख़िर हुकूमत है किसकी? आपकी है। आपने बनाई है। वह ज़माना चला गया जब अंग्रेज फौज से राज्य करते थे आज सच्ची हुकूमत आप ही हैं। आपने उनको बड़ा बनाया, आप उनको छोटा बना सकते हैं।

मान लो, कि यहाँ सब मुसलमान बिगड़े हैं, सब के पास हथियार पड़े हैं, बारूद-गोला पड़ा है। उनके पास स्टैनगन पड़ी है, ब्रेन गन पड़ी है, मशीनगन पड़ी है। सब मारने को तैयार हैं। लेकिन फिर भी आपको हक नहीं है कि आप उन्हें मारें। हर एक आदमी हुकूमत बन जाता है तो किसी की हुकूमत नहीं रहती। अगर हर एक आदमी अपनी बनाई हुई हुकूमत का हुक्म मानता है तो पीछे सब काम हो सकता है। नहीं तो दुनिया हंसेगी, अरे देखो, तुम्हारी दिल्ली। दूसरी योरुप की कोई ताकत रूस की ताकत हो, फ्रांस हो, अंग्रेज़ हों, अमरीका हो सब मिलकर हमको चिढ़ा सकते हैं, आप आज़ादी रखना कहाँ जानते हो, आप तो गुलाम बनना ही जानते हो। वैसा होना नहीं चाहिये। इसलिए मैं मुसलमानों को कहूँगा जितने हथियार उनके पास यहाँ पड़े हैं वह सब हथियार उनको अपने आप दे देना चाहिये। किसी के डर से नहीं। लेकिन वे हिन्दुस्तान के हैं और हिन्दुस्तान में पड़े हैं और भाई बनकर अगर यहाँ रहना चाहते हैं तो हथियार दे दें। पीछे वे बतला दें कि हम तो वफादार हैं, हिन्दुस्तान के हैं और हम कभी बेवफा नहीं हो सकते हैं। हिन्दू क्या, मुसलमान क्या, सब आपके हैं। मुसलमानों को यह भी कहना है कि अगर पश्चिमी पंजाब में, सरहद में, बिलोचिस्तान में, सिन्ध में मुसलमान बिगड़ते हैं और वहाँ हिन्दू और सिक्ख चैन से और आराम से नहीं रह पाते हैं तो पीछे हमारे लिए यहाँ दुश्वारी हो जाती है। आखिर में सब इन्सान हैं, इन्सानियत को समझें। हम कहाँ तक समझाते रहें। इन्सान बिगड़ भी जाता है, अच्छा भी होता है। अच्छे तरीके से रह सकता है तो यहां अच्छे तरीके से रहे। कोई शख्स ऐसा बिगड़ जाता है कि वह हैवान बन जाता है। तब मैं दिल्ली के हिन्दुओं को कहूँगा आप खबरदार रहें, बहादुर बनें, बुजदिल न बनें। मुसलमानों के हथियारों से डरना बुज़दिली का काम है। हमें क्या परवाह है कि मुसलमान कहीं हथियार लेकर बैठे हैं। उनसे हथियार लेना हुकूमत का काम है। मिलिटरी का काम है उनके पास से हथियार छीन ले। अगर वे शरीफ बनते हैं, अगर वे हिन्दुस्तान के सच्चे हैं और हिन्दुओं के पास सब भाई २ की तरह मिल कर रहना चाहते हैं तो हथियार दे दें। और मुसलमान कहें की हमने गलती की।

ऐसा समझते थे कि हम दिल्ली सर कर लेंगे और सारे हिन्दुस्तान को पाकिस्तान लेंगे। लेकिन अब हम समझ गये हैं कि हिन्दुस्तान को पाकिस्तान बनाना है ह ऐसे नहीं हो सकता। हमारे पास पाकिस्तान तो है उससे हमें इतमीनान होना ये। हम वहां हिन्दुओं को बचा सकते हैं खुश रह सकते हैं। तब तो यह होगा ाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों भले होने में मुकाबला करने लगेंगे और भल- मे कौन ज्यादा खुदापरस्त है इसमें मुकाबला करेंगे। मक्के की तरफ देखें, या की तरफ देखें सच्चाई तो हम लोगों के दिल में पड़ी है, सफाई तो दिल से होनी ये। हम एक दूसरे का भलाई में मुकाबला करें तो हम सब ऊँचे होकर काम कर हैं।

मैं यहाँ आया हूँ, तो मैंने आपको कह दिया है कि मैं तो यहाँ मरना चाहूँगा। हम दीवाने बनते रहें और गुस्से में आ जायें और मुसलमानों को मारें तो वह तो मेरा नहीं है। उसका गवाह मैं नहीं बनना चाहता हूँ। मुसलमान माने कि सब गुनाहगार हैं, सिख सब गुनाहगार हैं और हिन्दू और सिक्ख कहें कि ामान गुनाहगार हैं तो दोनों गलती करते हैं। मैं तो सबको एक जानता हूँ। मेरे ोक हिन्दू हो, मुसलमान हो सब एक दर्जा रखते हैं। इसमें जो सच्चे हैं वे ईश्वर ान्य हैं। जो बुरे हैं उनकी बुराई की सजा आप क्या देने वाले हैं। वे अपने आप सजा ाले हैं। इसमें मुझे कोई शक नहीं है। सारी दुनियां के धर्मों का यह मैंने निचोड़ ला है। इसलिए मैं कहूँगा कि मुसलमान कैसा भी बुरा करें लेकिन आपको तो ई ही करनी है। बुराई का बदला देना है सचमुच तो वह भलाई से हो सकता है। मैं कम से कम आपको करते देखना चाहता हूँ। इतना हम करें तो हिन्दुस्तान की । हुकूमत को अच्छा रख सकते हैं। अगर नहीं तो हम सब गवाँ देते हैं।

★

१८ सितम्बर, १९४७

आज हम सब दीवाने बन गये हैं, मूरख बन गये हैं, ऐसा नहीं है कि सिक्ख ही दीवाने बने, हिन्दू ही या मुसलमान ही दीवाने बन गये हैं। मुझ से कहा जाता है कि सारा आरम्भ तो मुसलमानों ने किया। वह ठीक है, मैं तो मानता हूँ कि उन्होंने आरम्भ किया। इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन वह याद करके मैं करूंगा क्या? आज क्या करना है, मुझको तो वह देखना है। हिन्दुस्तान रूपी गजराज को हो सके तो छुड़ाना चाहता हूँ। मुझको क्या करना चाहिए। मुझको तो ईश्वर का सहारा लेना चाहिये। मेरा पराक्रम कुछ कर सके तो मुझको खुशी है। पर मेरा शरीर तो थोड़ी हड्डी है, थोड़ी चर्बी। ऐसा आदमी क्या कर सकता है? किसको समझा सकता है? लेकिन ईश्वर सब कुछ कर सकता है। तो मैं रात-दिन ईश्वर को पकड़ता हूँ। हे भगवान, तू अब आ, गजराज डूब रहा है। हिन्दुस्तान डूब रहा है, उसे बचा।

हिन्दुस्तान में सिवा हिन्दू के कोई रहे ही नहीं, मुसलमान रहें तो गुलाम होकर रहें तो ऐसी बात तो नहीं है। आप देखें तो जवाहरलाल क्या कहता है। हम तो तंगी में पड़े हैं। दूसरे जो काम करने हैं उन्हें नहीं कर सकते। इसी एक काम में पड़े हैं। अगर मान लें कि सब मुसलमान गन्दे हैं, पाकिस्तान में सब बिगड़ गये हैं तो उससे हमको क्या? पाकिस्तान में सब गन्दे हैं तो क्या हुआ? मैं तो आपको कहूँगा कि हम तो हिन्दुस्तान को समुन्दर ही रखें जिससे सारी गन्दगी बह जाय। हमारा यह काम नहीं हो सकता कि कोई गन्दा करे तो हम भी गन्दा करें। तो आज मैं दरियागंज चला गया। मेरे पास मुसलमान भाई भी आते हैं। उनसे बातें करता हूँ, मोहब्बत करता हूँ और उनको कहता हूँ कि आप क्यों डरते हैं। आप तगड़े बन जायँ। आप क्यों घर-बार छोड़ते हैं। आप जाकर बैठिये अपने घर

में। यहाँ वे तो शरारत नहीं कर सकते इसलिए मैं चाहता हूँ कि सब हिन्दू भले हो जायँ। सब सिक्ख भले बन जायँ। जो मुसलमान पड़े हैं और जो पाकिस्तान नहीं जाना चाहते हैं उनसे सिक्ख और हिन्दू कहें कि आप अपने घर में जाकर बैठो। यहाँ तो दुनियाँ में सब से बड़ी मस्जिद, जुमा मस्जिद पड़ी है। हम बहुत से मुसलमानों को मार डालें और जो बाकी बचें वे भय के मारे पाकिस्तान चले जायँ, तो फिर मस्जिद का क्या होगा? आप मस्जिद को क्या पाकिस्तान में भेजोगे, या मस्जिद को ढाह दोगे या मस्जिद का शिवालय बनाओगे। मानलो कि कोई हिन्दू ऐसा गुमान भी करे कि शिवालय बनायेंगे, सिक्ख ऐसा समझें कि हम तो वहाँ गुरुद्वारा बनायेंगे। मैं तो कहूँगा कि वह सिक्ख धर्म और हिन्दू धर्म को दफनाने की कोशिश करनी है। इस तरह तो धर्म बन नहीं सकता है।

पाकिस्तान में जाने वाले जो जाना चाहते हैं वे यहाँ से चले जायँ। मगर जो हिन्दुओं के डर के मारे चले गये, पुराने किले में हैं, हुमायूं के मकबरे में हैं वे क्यों वहां रहें? मैंने तो उनको कहा है कि जो अपने घरों में हैं वे यहीं पड़े रहें और पीछे हिन्दू मारें पीटें, काट डालें तो भी न हटें। मैं आपके पीछे कट जाऊँगा। मेरी जान है, वह जान मैं फिदा कर दूंगा। या तो करूंगा या मरूंगा। उनको कुछ हौसला आया और उन्होंने कहा कि हम यहीं मरेंगे, घर है वहाँ से हटेंगे नहीं। मेरा ख्याल है कोई मुसलमान वहाँ से हटेगा नहीं। अपने घरों में पड़े हैं, सदियों से यहाँ हैं। उनको आज हम निकाल दें? लेकिन वह नहीं हो सकता। जो यहाँ से चले गये हैं उनका क्या करें? मैंने कहा कि उनको हम अभी नहीं लायेंगे। पुलिस के मार्फत, मिलिटरी के मार्फत थोड़े ही लाना है? जब हिन्दू और सिक्ख उन्हें कहें कि आप तो हमारे दोस्त हैं आप आइये अपने घर में, आपके लिए कोई मिलिटरी नहीं चाहिये, कोई पुलिस नहीं चाहिये, हम आपकी मिलिटरी हैं, पुलिस हैं। हम सब भाई-भाई होकर रहेंगे तब उन्हें लावेंगे। हमने दिल्ली में ऐसा कर बतलाया, तो मैं आपको कहता हूँ कि पाकिस्तान में हमारा रास्ता बिल्कुल साफ़ हो जायेगा। और एक नया जीवन पैदा हो जायगा। पाकिस्तान में जाकर मैं उनको नहीं छोड़ूंगा। वहाँ के हिन्दू और सिक्खों के लिए जाकर मरूंगा। मुझे तो अच्छा लगे कि मैं वहाँ मरूँ। मुझे तो यहाँ भी मरना अच्छा लगे, अगर यहाँ जो मैं कहता हूं नहीं हो सकता है तो मुझे मरना है। मुझको भी गुस्सा आता है लेकिन इन्सान तो ऐसा होना चाहिए कि गुस्से को पी जाय। मैंने सुना कि काफ़ी औरतें जो अपनी शर्म को गँवाना नहीं चाहती थीं मर गईं। काफ़ी

मर्दों ने खुद अपनी औरतों को मार डाला। मुझे तो यह बड़ा अच्छा लगता है। क्योंकि मैं समझता हूँ कि वे हिन्दुस्तान को बुजदिल नहीं बनाते हैं। आखिर मरना जीना यह तो थोड़े दिनों का खेल है। गया तो गया लेकिन बहादुरी से गया। अपनी शर्म नहीं बेच डाली। यह नहीं था कि उनको जान प्यारी न थी लेकिन उनको मुसलमान जबर्दस्ती इस्लाम में लायें और उनकी मिट्टी ख्वार करें उससे बेहतर था बहादुरी से मर जाना। औरतें मर गईं, दो चार नहीं। काफी औरतें मरीं। यह सब सुनता हूँ। मेरी तो आंख खुशी से नाचना शुरू कर देती है कि ऐसी बहादुर औरतें हिन्दुस्तान में पड़ी हैं। लेकिन जो लोग भागे हैं वे लोग कहाँ जायें? उनको वापस जाना है और शान के साथ। हम अपने यहां तो न्याय ही करें। अपना दामन शुद्ध रक्खें और अपने हाथ शुद्ध रक्खें तब हम सारी दुनिया के सामने न्याय माँग सकते हैं। मैंने कह दिया है कि जो मुसलमान हथियार रखते हैं उन मुसलमानों को हथियार छोड़ देना चाहिये। परसों जैसा मैंने कहा है सब लोग हथियारों को दे दें। मैं समझता हूँ कि उसमें कुछ देर लगेगी। लेकिन बात चल गई है, हथियार तो छोड़ना ही है। हथियार से बच नहीं सकते।

दूसरी मेरे पास बड़ी शिकायत आती है जो हमारे सिपाही लोग, मिलिटरी वाले हैं पर हिन्दू हैं, सिक्ख भी हैं, उसमें क्रिस्टी भी पड़े हैं, गोरखे पड़े हैं, वे सब रक्षक हैं पर भक्षक बन गये हैं। यह कहाँ तक सच है और कहां तक झूठ है, मैं नहीं जानता हूँ। लेकिन मैं अपनी आवाज़ उन पुलिस वालों तक पहुँचाना चाहता हूँ कि आप शरीफ बनें। कहीं तो ऐसा सुना है कि वे खुद लूट लेते हैं। मुझको आज सुनाया गया कि कनाट प्लेस में कुछ हो गया। और वहाँ जो सिपाही और पुलिस के लोग थे उन्होंने लूटना शुरू कर दिया। मुमकिन हो कि वह सब गलत हो। लेकिन उसमें कुछ भी सच्चाई हो तो मैं सिपाही और मिलिटरी से कहूँगा कि अंग्रेज का जमाना चला गया। तब जो कुछ करना चाहते थे वे कर सकते थे लेकिन आज तो वे हिन्दुस्तान के सिपाही बन गये हैं। उन्हें मुसलमान का दुश्मन नहीं बनना है, उनको तो हुक्म मिले कि उसकी रक्षा करो तो वह करनी ही चाहिये।

★

१६ सितम्बर, १६४७

मुझे एक पर्चा मिला है। यह पहले सरदार के पास पहुँचा, पीछे मेरे पास। उसमें कहते हैं, जब तक हम मुसलमानों के बीच पड़े हैं, आराम से रहने वाले नहीं। पाकिस्तानसे हिन्दुओं को भागना पड़ा। कूचा ताराचन्द में उनके चारों तरफ मुसलमान हैं उन्हें डर रहता है कि मुसलमान कुछ गोलाबारी करें तो? वे कहते हैं अच्छा होगा कि सब मुसलमान यहां से चले जावें। काफ़ी तो चले गये हैं, पर काफ़ी अभी यहां पड़े हैं। मैंने आपको सुनाया कि कल मैं गया था तो उससे उल्टी बात मैं मुसलमानों को कह कर आया। सो जो लोग यहाँ पड़े हैं उनकी जान का सवाल नहीं उठता। जो चले गये हैं, उनको भी मैं तो यही कह सकता हूँ कि आप आ जायँ। जबरदस्ती से लाने की बात नहीं। जब हम पंचायत का राज्य चलाते हैं तो जबरदस्ती से थोड़े ही चला सकते हैं। लोगों को समझायें, लोगों को तालीम दें, ऐसे हम क्यों डरें? जिन मुसलमानों के साथ इतने बरसों से रहे हैं वे ही मुसलमान आज ऐसे बिगड़ गए हैं कि उन्हें रखा नहीं जा सकता? बिगड़ भी सकते हैं, मैं यह नहीं कह सकता कि वे नहीं बिगड़ सकते। लेकिन जो अच्छे थे वे बिगड़ें तो पीछे वे अच्छे भी हो सकते हैं। हम अगर अच्छे होते है और अच्छे होना ही काफी नहीं। बहादुर भी होना चाहिये, और इसके साथ ज्ञान भी होना चाहिये तो हमारे सम्पर्क में जो बुरे आदमी आ जाते हैं वे भी भले हो जाते हैं। यह मेरा न्याय नहीं है, यह दुनिया का न्याय है। मैं अपनी बात आपसे नहीं कहता हूँ। तो मैंने जो कल बताया था आज भी वही कहूँगा कि मैं बचपन से ऐसा ही सीखा हूँ। अब मैं नया सबक नहीं ले सकूंगा। और मुझे अब जीना कितना है? मैंने कहा, आप मुझे यह सुनाते तो हैं, लेकिन उसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता हूँ। बर्दाश्त नहीं करूंगा तो किसी को मारूंगा, ऐसा नहीं। मैं मर जाऊँगा, ऐसा हो सकता है। इत्तफाक से मेरे हाथ में

एक दूसरा पर्चा आ गया। वह भी रास्ते में किसी ने दिया। जो पर्चा रास्ते में मिले वह मैं मोटर में पढ़ लेने की कोशिश करता हूं। उस पर्चे में लिखते हैं, पश्चिमी पंजाब में इतना अत्याचार हो गया, अभी भी तुम क्यों नहीं समझते हो। उसके साथ एक और पर्चा है, जिसमें न नाम है न दस्तखत। उसमें लीग वालों से कुछ कहा है। गंदी बातें भरी हैं। वैसे लीग वाले करें तो पीछे पाकिस्तान का क्या होगा और हिन्दुस्तान का क्या होगा, उसका पता ही नहीं चल सकता। तो क्या हम भी गंदे बनें। यह मेरी नजर में न्याय नहीं।

वहां इर्द गिर्द में मुसलमान रहते हैं। कुछ मुस्लिम कार्यकर्ताओं ने वहीं रहना पसन्द किया। मुसलमानों के वे सेवक हैं। कोई मार डाले तो भले मार डाले वे बहादुर हैं सो रहते हैं। मेरे पास चले आए। काफी मुसलमान पड़े हैं। उनका कहना है कि बहुत लोग घर छोड़ चुके हैं, लेकिन मैंने देखा, काफी मुसलमान तो भी वहां थे, हिन्दू थोड़े ही थे। जितने हिन्दू भाई वहां भागे हैं उनको मैंने सुनाया कि मैं तो बचपन से ऐसा ही सीखा हूँ। पॉलिटिक्स में दाखिल हुआ उससे पहले से मानता आया हूं कि मुसलमान-हिन्दू सब को मिल-जुल कर रहना है। ऐसे ही हिन्दुस्तान बना है, ऐसे हिन्दुस्तान रहना चाहिये। तो जो आदमी बारह बरस की उमर से यही काम करता आया है, तो आज उसकी जबान से दूसरी चीज़ नहीं निकल सकती। मुझको तो यह पसन्द होगा, कि कोई अपनी जगह से हटे नहीं, वहीं मर जावे। यही मैं मुसलमानों से कहता हूं और यही हिन्दुओं को कहता हूँ।

हिन्दू कहते हैं मुसलमानों के पास इतने हथियार पड़े हैं। वे निकलें तो हम समझें, नहीं तो हम कैसे मानें कि वे पीछे हमला न करेंगे। मैं कहूँगा कि उसमें हम न पड़ें वह हुकूमत का काम है। किसी के पास परवाना नहीं है, लाइसेन्स नहीं है तो उसके पास हथियार नहीं रख सकते हैं, भले ही वे लोग अपनी रक्षा के लिए हथियार रखते हों। रखना है तो लाइसेन्स ले लो। लेकिन हथियार से रक्षा क्या करनी थी, पाँच मुसलमान हैं, पाँच सौ हिन्दू और सिक्ख उनका मुकाबला क्या ? वे पड़े रहें। भले ही हिन्दू-सिक्ख उन्हें काट डालें ? जो पाँच ऐसे कट जायेंगे, बिना हथियार ईश्वर का नाम लेते चले जायँगे वे बड़े बहादुर हैं। वे कहते हैं, आप हमारे भाई हैं; मारना है तो मार डालें। यही मेरी सलाह सब के लिये है। आज मेरे पास काफी हिन्दू पाकिस्तान के आ गए और सबने अपना दुःख मुझको सुनाया। कई हँस कर सुनाते थे, कई बहनों ने रो दिया। मैंने उन्हें सुनाया, आपकी मार्फत सबको सुना देना चाहता हूं कि हम बुजदिल न बनें। पाकिस्तान में मुसलमानों ने अत्या-

चार किया। इसलिये हम यहाँ के मुसलमानों से न डरें, न उन्हें डरावें। ऐसे भी मुसलमान पड़े हैं जो पाकिस्तान में रह ही नहीं सकते।

तो जो पर्चा मुझे मिला है, उसमें लिखा है कि अब तो पाकिस्तान में कोई गैर मुसलमान रहने वाला नहीं है, तो पीछे हिन्दुस्तान में मुसलमान क्यों रहें? तो मैं कहता हूँ कि एक आदमी आज गन्दगी करता है तो गन्दी चीज की हम नकल न करें। पाकिस्तान में एक भी गैरमुसलमान नहीं रह सकता। वह पाकिस्तान के माने हो नहीं सकते हैं, और इसलाम के भी नहीं हैं। इसलाम की सल्तनत फैली हुई है। कहीं ऐसा कानून नहीं बना है कि वहाँ कोई गैरमुसलमान न रहे? गैरमुसलमान थे और आराम से रहते थे, सुख से रहते थे। उनके पास पैसा भी रहता था। तो अब क्या नया इसलाम हिन्दुस्तान में दाखिल होने वाला है? इसलाम १३०० बरस से चल रहा है, उसके पीछे इतनी तपश्चर्या हुई, इतनी कुर्बानियां हुई। पीछे कोई नया इसलाम निकले तो वह सच्चा इसलाम नहीं, जिसे सब मुसलमान अच्छा कह सकते हों, सोचो। इसका मतलब यह है कि सच्चा हिन्दुस्तान वह नहीं है जिसमें हिन्दू के सिवा कोई रह न सकता हो, सच्ची क्रिश्चियैनिटी तो वह नहीं है जिसमें सिवा क्रिश्चियन के कोई रह ही नहीं सकता हो। वह धर्म नहीं है, अधर्म है। इस तरह से दुनियाँ नहीं चली है, न चलती है और न चलने वाली है; तो हम नया इतिहास लिखने के प्रपंच में क्यों पड़े? ऐसा करके हम हिन्दुस्तान को तबाह न करें और पाकिस्तान को तबाह होने न दें। यहां आज साढ़े चार करोड़ मुसलमान हैं, वे सब वहां चले जायें? और पीछे जुमा मस्जिद है उसको भी ले जायें, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी है उसको भी ले जायें, और तमाम मुस्लिम मक़बरे में पड़े हैं, वे सब पाकिस्तान में चले जायें, पीछे जो गुरुद्वारे हैं वहां वेस्ट पंजाब में हैं उन्हें ईस्ट पंजाब में ले जायें? वहां जितने हिन्दू रहते थे उनके मन्दिर वहां पड़े हैं, वे पाकिस्तान में रह नहीं सकते तो मन्दिरों को यहां लाना चाहिये? इसका मतलब यह होगा कि सबको तबाह होना है, अपना धर्म है उसको तबाह करना है। मैं तो इसका गवाह बनना ही नहीं चाहता हूँ। उससे पहले ईश्वर मुझको उठा ले। और मैं तो कहूँगा कि जो पीछे सब नौजवान पड़े हैं वे करते-करते मरें। उनके रहते हुए हिन्दुस्तान बेहाल न हो। यह मैं देखना नहीं चाहता हूँ। देखना चाहता हूँ तो यह कि खराबी को साफ़ करने में हम सब मर जायें।

★

२० सितम्बर, १९४७

आप ईश्वर का भजन करें और उसी का भरोसा करें। यह सब की समझ में नहीं आता। वे कहते हैं कि ईश्वर कहाँ पड़ा है? ईश्वर रहे तो इतने झंझट में हम क्यों पड़े? अगर मुसलमान ज़हमत में पड़ जाते हैं तो वे कहें ईश्वर कहाँ है, अल्लाह कहाँ है, खुदा कहाँ है, कुरान शरीफ कहाँ है। बहुत लोग कहते हैं। लेकिन वे सब गलती करते हैं। खुदा है, अल्लाह है, ईश्वर है, राम है, उसे याद करने के लिये ऐसे मौके हैं। वह हमको मदद देता ही है। वह हमें थोड़े पूछने वाला है कि हम उसको पहिचानते हैं या नहीं। वह हमारे हाथों में नहीं आता उसे आँखों से नहीं देख सकते हैं, कानों से नहीं सुन सकते हैं, इसलिए वे कहते हैं कि इन्द्रियों से बाहर पड़ा है। ऐसी एक वह हस्ती है दूसरे सब नास्ति है। हम सब नास्ति हैं। हम कहें जब हम जिन्दा रहते हैं तो नास्ति कैसे हो सकते हैं? आज तक तो मैं जिन्दा रहा लेकिन कल के लिए मुझे कोई नहीं बता सकता कि रहूँगा या नहीं। ऐसे ही, कल कल करके ७८ वर्ष निकाल दिये। और भी शायद दो चार दिन निकाल दूँ या वर्ष निकाल दूँ। लेकिन हम क्या जानें। मैं कैसे कह सकता हूँ कि कोई आदमी अभी ज़िन्दा है तो वह एक मिनट बाद भी ज़िन्दा रहेगा या नहीं। कोई नहीं कह सकता। इसलिये मैं कहता हूँ कि हम तो नास्ति हैं जिसका कोई ठिकाना नहीं है। हमेशा के लिए नहीं रह सकते। "अस्ति" वह तो एक ही हो सकता है। हस्ती शब्द अस्ति से निकला है। अस्ति के माने हैं आदि है, अनादि है, और आयन्दा रहेगा। ऐसा हमेशा रहने वाला अस्ति है, जिसने हमको बनाया है और जो हमको बिगाड़ सकता है, यहाँ से उठा सकता है। मेरे नजदीक तो वह बिगाड़ता नहीं। हमको बनाता ही है। इसलिए अगर आज हम मानें कि वह नहीं मिल सकता और बिगड़ें तो वह मूर्खता होगी। लेकिन वह तो है और सब कुछ कर सकता है। वह रहीम है और उसके लिए सब एक हैं। वह किसी का बिगाड़ेगा नहीं, न किसी को मारेगा, न किसी को गाली देगा। वही उसका कानून है।

मुसलमान भी मेरे पास आ जाते हैं। वे यहाँ की बात सुनाते हैं कि हम दिल्ली में अभी तक रहे हैं लेकिन अब तो हम रह नहीं पा रहे और भाग रहे हैं। तो मैं उनको कहता हूँ कि जब तक मैं जिन्दा पड़ा हूँ तब तक आपको यहीं रहना चाहिये, खिलाफत के जमाने में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सब साथ-साथ पड़े थे। मैं तो गुरुद्वारे में गया हूँ और मुसलमान भी मेरे साथ आये हैं। ननकाना साहब का जो बड़ा किस्सा बन गया। उस वक्त मौलाना साहब थे, अली भाई थे और मैं था। सब ऐसा मानते थे कि सिक्ख हो, मुसलमान हो, हिन्दू हो वे तीनों एक हैं। जलियाँवाला बाग में क्या हुआ? सब पुकार-पुकार कर और चीख-चीख कर कहते थे कि यहाँ तो सबका खून मिल गया क्योंकि उसमें सब थे। हिन्दू थे, मुसलमान थे और सिक्ख थे, सबका खून मिला। उस वक्त तो बड़े जोर से कहते थे कि अब तो हमारा खून एक हो गया। उसको कौन जुदा कर सकता है। तो आज फिर वह जुदा बन गया। मुसलमान कहता है कि सिक्ख है, वह तो हमारे साथ मिल नहीं सकता है। सिक्ख कहते हैं कि मुसलमानों के साथ क्या मिलना था। क्या गुनाह किया है एक दूसरे का जो एक दूसरे के दुश्मन बन गये। तो मैं तो हैरान हो जाता हूँ। मैं पड़ा हूँ, जिन्दा रहता हूँ, तो मैं तो तीनों का खून आज भी एक है, वही मान कर। हो सकता है तो उसे सिद्ध करने के लिये। ऐसा चीखते-चीखते ईश्वर के पास रोते रोते। इन्सान के पास तो मैं रोता नहीं हूँ लेकिन ईश्वर के पास तो रो सकता हूँ, उसकी मिन्नत कर सकता हूँ क्योंकि उसका तो गुलाम मैं हूँ। सब को उसका गुलाम बनना चाहिये। पीछे किसी इन्सान को किसी के गुलाम रहने की आवश्यकता नहीं रहती। कहता हूँ कि अगर मैं ऐसा कर सकूं तो जिन्दा रहना चाहता हूँ। नहीं तो ईश्वर मुझको यहाँ से उठा ले।

मेरा सिर शर्म से झुक जाता है और मैं शर्मिन्दा बन जाता हूँ कि वही हिन्दू, वही सिक्ख, वही मुसलमान जो कल तक एक दूसरे को भाई-भाई कहते थे आज एक दूसरे के दुश्मन हो गए हैं। कोई तो समझे कि वह हमारे दुश्मन नहीं हो सकते। चार-पांच भाई आये। उन्होंने मुझे कहा कि यहां जो साढ़े चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं वे ऐन मौके पर बाग़ी हो जायेंगे! वे तो आखिर मुसलमान हैं। पाकिस्तान में भी मुसलमान हैं। मानो कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में लड़ाई हो गई या कुछ और ऐसा हो गया तो क्या वे पाकिस्तान को खुफिया तौर से मदद नहीं देंगे? तो मैंने उनसे कहा कि माना कि कोई दें मगर सब के सब तो ऐसा कर नहीं सकते। मैं आपको कहना चाहता हूँ कि साढ़े चार करोड़ मुसलमान

ऐसे बन नहीं सकते हैं। मैंने उन भाइयों को कहा कि अगर आप शरीफ रहें, हम शरीफ रहें, जितने यहाँ अक्सरियत में हिन्दू पड़े हैं, सिक्ख पड़े हैं वे सब शरीफ बनें, वे अगर किसी मुसलमान की दुश्मनी नहीं करते हैं तो मैं ज़ोरों से कहूँगा कि साढ़े चार करोड़ मुसलमान में से, एक भी बेवफ़ा नहीं बन सकता है। हमको बहादुर बनना चाहिये। अक्सरियत में होते हुए हम बुज़दिल न बनें। साढ़े चार करोड़ मुसलमान हिन्दुस्तान में हैं मगर सब तो ४० करोड़ हैं। वे ऐसे बुज़दिल बनें कि साढ़े चार करोड़ मुसलमानों से डरें? मैं कहता हूँ कि साढ़े चार करोड़ अगर हिन्दुस्तान के बेवफा बनते हैं तो वे इस्लाम से बेवफाई का काम करेंगे और इस्लाम को खत्म कर देंगे। लेकिन अगर हम भी ऐसे ही बनें, बुज़दिल बनें, दग़ाबाज़ बनें और उनका भरोसा बिल्कुल न करें और यहाँ एक भी मुसलमान को न रहने दें तो मैं आपको कहता हूँ कि हिन्दुस्तान में हिन्दू अकेला तो कुछ खा नहीं सकेगा। उनका रोटी खाना पीछे जहर सा हो जायगा।

हिन्दुस्तान के बाहर कोई भी मुसलमान या दूसरी सल्तनत हो, या तो पाकिस्तान में जो मुसलमान हैं वे हिन्दुस्तान पर हमला करते हैं तो मैं आपको कहता हूँ कि साढ़े चार करोड़ मुसलमान जो यहाँ पड़े हैं, उनको हिन्दुस्तान की वफ़ादारी करनी है। अगर नहीं करते हैं तो उनको शूट करो, यह तो कानून में पड़ा है। मेरा कानून तो दूसरा है तो मैंने बतला दिया। लेकिन उसको कौन मानेगा? लेकिन जो दुनिया का कानून बना है, उसमें तो जो ट्रेटर होता है, फ़िफ़्थ कॉलमिस्ट होता है—जिस मुल्क में रहता है अगर उस मुल्क को डुबोने का काम करता है तो वह ट्रेटर है, वह बेवफ़ा है। उसके लिए एक ही सज़ा है कि उसको मार डालो। मैं कहता हूँ कि आखिर इतनी बड़ी सलतनत पड़ी है साढ़े चार करोड़ मुसलमान सब के सब तो बेवफा हो नहीं सकते। साढ़े चार करोड़ मुसलमानों को किसने देखा है। वे तो ७ लाख देहातों में पड़े रहते हैं, थोड़े शहरों में पड़े हैं। यू० पी० में पड़े हैं, बिहार में पड़े हैं, सब देहातों में फैले हुए हैं। मैं तो देहात में रहा हूँ और उन सब को जानता हूँ। वे कभी बेवफा नहीं हो सकते हैं। सेवाग्राम में भी मुसलमान पड़े हैं। वे सेवाग्राम में काम करते हैं। वे सेवाग्राम के लिए वफादार रहेंगे, उसके लिए मर जायेंगे। वे क्या जानें कि दूसरी जगह मुसलमान क्या करते हैं। वे तो सेवाग्राम में रहते हैं, वे सेवाग्राम के आश्रम की रक्षा करते हैं और सब को भाई-भाई समझ कर रहते हैं। कोई कहे कि सारे के सारे साढ़े चार करोड़ मुसलमान जो यहाँ के रहने वाले हैं बेवफा हो सकते हैं तो वह नहीं होने वाला। और बेवफा से हम

क्यों डरें, मैं तो नहीं डरता हूँ अगर वे हिन्दुस्तान में पड़े हैं और बेवफ़ाई करते हैं तो मैं कहूँगा कि उनको मरना है और इस्लाम को मार डालना है।

सच्चे काफ़िर तो वे हैं जो हमारी रोटी खाएँ, हमारे यहाँ नौकर बनें लेकिन काम हमारे दुश्मन बनकर करें और हमारा गला काटें। ऐसे हिन्दू भी बने हैं, सिक्ख भी बने हैं, मुसलमान भी बने हैं। दुनिया में हर किस्म के लोग रहते हैं, लेकिन ऐसा समझना कि साढ़े चार करोड़ मुसलमान जो यहां पड़े हैं, इस तरह से दग़ाबाज़ बनेंगे हमारी बुज़दिली है और इससे यह पता चलता है कि हम सच्चे हिन्दू नहीं हैं, हम सच्चे सिक्ख नहीं हैं। हमारी शराफ़त, जितने अफ़सर पड़े हैं उनकी शराफ़त, हिन्दू हैं, सिक्ख हैं उन सब की शराफत और बहादुरी इसी में पड़ी है कि वे कहें कि तुमको जाना ही नहीं चाहिये। उनकी मिन्नत करना चाहिये कि आपको कोई छू नहीं सकता। छोड़िये, हमने काफी बुरा काम किया है पर आगे नहीं करने वाले। क्यों जाते हो? पाकिस्तान पहुँचोगे तो वहाँ क्या होगा और वहाँ जाकर क्या करोगे? उसका क्या पता है? यहाँ तो तुम्हारा घर पड़ा है, सब कुछ है। ऐसी मोहब्बत से हम उनको रक्खें। तो सरहदी सूबे में, डेराइस्माइल खाँ वहाँ के जो मुसलमान अफ़ीदी लोग हैं वे भी हमारे लोगों को कहेंगे कि आपको भागना नहीं है। यह शराफत का असर है। अगर हम दिल्ली में शान्ति कायम रक्खें, डर के मारे नहीं या गाँधी कहता है इसलिए नहीं, लेकिन अगर सच्चे दिल से आप इस तरह चलें तो मैं आपको कौल दे सकता हूँ कि कोई मुसलमान आपको ईज़ा नहीं कर सकता है और अगर करेगा तो ईश्वर तो पड़ा है, वह सर्वशक्तिमान है, सबको पूछने वाला है, वह हमारी रक्षा करेगा इसमें मेरे दिल में कोई शंका नहीं है।

*

२१ सितम्बर, १९४७

जिस तरह से आज हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान रह रहे हैं, इस तरीके से नहीं रह सकते हैं। मुझको यह बड़ा बुरा लगता है और एक इन्सान जितनी कोशिश कर सकता है, उतनी मैं इस चीज़ को हटाने की करूँगा। आपको मैं कह दूँ कि मुझको दिल में खुशी नहीं हो सकती है कि मैं जिन्दा रहूँ और जो मैं चाहता हूँ वह न कर सकूँ। ईश्वर मेरे पास से वह काम लेता है, तब तो भला है, अच्छा है, लेकिन अगर ऐसा नहीं होता तो मैं समझता हूँ कि मेरा काम ख़त्म हो गया। मैं कोई आत्महत्या करके मरना चाहता हूँ, ऐसा नहीं। यह सही है कि जो अपने जीवन को दूसरों ही की सेवा में काटना चाहते हैं उनके लिये दूसरी परीक्षा नहीं हो सकती है। जो वे करते हैं, उसमें से कुछ भी फल नहीं निकले। उसके लिए वे हैरान न हों। लेकिन जब फल नहीं मिलता है तो जिस तरह से एक वृक्ष जिसमें फल नहीं आते और वह सूख जाता है, उसी तरह से मनुष्य भी एक वृक्ष जैसा है इसको सूख जाना चाहिये, और वह सूख जाता है यह सृष्टि का नियम है। हिन्दू धर्म के मुताबिक आत्मा तो अमर है; वह मरती नहीं। एक शरीर जो निकम्मा हो गया है और उसकी कोई उपयोगिता नहीं है, उसको तो ख़त्म होना चाहिये। उसकी जगह नया आ जाता है। परन्तु आत्मा अमर होती है और सेवा के द्वारा अपनी मुक्ति के लिये नये-नये चोले धारण करती है।

तो आज मैं चला गया जहाँ एक ओर बहुत से हिन्दू और दूसरी ओर बहुत से मुसलमान एक साथ पड़े थे। उन्होंने कहा 'महात्मा गांधी ज़िन्दाबाद', उसके क्या मानी? हिन्दू भी वैसे कहें, वह भी क्या मानी रखता है, अगर दोनों के दिल अलग-अलग हैं और वे एक दूसरे के साथ शान्ति से नहीं रह सकते। तो मुझको वह जयघोष कठोर सा लगा। मैंने उन मुसलमानों से कहा कि आप लोगों को घबराहट क्या करनी थी? आखिर में मरना है तो मर जायेंगे। मरेंगे अपने भाइयों के हाथ से, दूसरे के हाथ से मरने वाले नहीं हैं। आप उन पर रोष न भी करें, उनको मारने की चेष्टा भी न करें; खुद मर जायँ लेकिन वहाँ से आप डर के मारे न भागें और

न वहाँ से हटें। मैं तो उस पर कायम हूँ। लेकिन एक बात मैंने यहाँ सुनी कि वह महात्मा कैसा बुरा आदमी है ? वह ऐसा कर रहा है कि हमने जिन मुसलमानों को उनके घरों में से हटा दिया, उनको उन्हीं घरों में फिर वापिस लाना चाहता है। बात सच्ची है। मैं उनको वापिस लाना चाहता हूँ, लेकिन वह किस तरह से लाना चाहता हूँ ? मैंने तो उनको कहा, और आज भी उनको कह कर आया हूँ कि जो डर से भागे हैं उन्हें वापिस लाना चाहता हूँ। जो खुशी से अपने आप पाकिस्तान जाना चाहते हैं, उनको तो जाने में कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए। लेकिन डर' के मारे, दुख के मारे और हुकूमत आपकी रक्षा नहीं कर सकती है, हिन्दू, सिक्ख, तो रक्षा करते ही नहीं हैं, ऐसा समझ कर आप जाना चाहते हैं, तो मुझको बड़ा दुख होगा। जो लोग पाकिस्तान नहीं जाना चाहते हैं और यहीं रहना चाहते हैं, मैं कहूँगा उनको कि तुम्हें यहाँ से नहीं जाना है। मैंने उनको कहा कि जो लोग बाहर चले गये हैं, वे तो तभी आ सकते हैं, और तब ही आना चाहिए, जब यहाँ के हिन्दू और सिक्ख खुशी से कहें कि आप आइये। पुलिस और मिलिटरी—उनके ज़रिये से उन्हें लाना मुझको तो अच्छा भी नहीं लगता। मैं तो कहता हूँ कि यह सब छोड़ दें। पुलिस नहीं चाहिये, मिलिटरी नहीं चाहिये। जो कुछ हमें करना है, हम कर लेंगे। मरना है, तो मर जायँगे। अगर कोई किसी को मारता नहीं है, तो वह मरता नहीं है। लेकिन अगर एक मारता है दीवाना बन गया है तो उसके सामने मैं क्यों दीवाना बनूँ ? मैं तो उसके हाथ से मर जाऊँ, वह तो मुझे बड़ा प्रिय लगेगा। वह मुझे काट दे, वह अच्छा लगेगा। मैं हुकूमत की तरफ़ से कह नहीं सकता हूँ। मेरे हाथ में हुकूमत है नहीं। मैं जैसा बना हूँ, वह तो आप जानते हैं। एक आदमी पागल बनता है और वह बुरा करता है, तो मैं वैसा नहीं कर सकता। पीछे वह भी मुझसे भलाई सीख लेता है। चालीस करोड़ हिन्दू-मुसलमान पड़े हैं, उसमें से पाकिस्तान में थोड़े करोड़ चले गये, लेकिन तब भी साढ़े चार करोड़ मुसलमान तो यहीं हिन्दुस्तान में पड़े हैं, बाकी तो सब के सब हिन्दू ही हैं। थोड़े पारसी, थोड़े क्रिष्टी, थोड़े यहूदी भी पड़े हैं, उसकी तो गिनती नहीं हो सकती है। तो वे आपस में लड़ कर मर जायँ तो भले मर जायँ, लेकिन पुलिस-मिलिटरी की मारफत ज़िन्दा रहना वह ज़िन्दगी नहीं। दोनों लड़ते हैं तो हुकूमत क्या करे ? हुकूमत कहे कि हम तो इस तरह से रह सकते हैं, नहीं तो हम हुकूमत छोड़ देते हैं। पीछे जो ऐसा मानते हों कि हिन्दुस्तान में तो हिन्दू ही रहें, क्योंकि पाकिस्तान में मुसलमान ही रहते हैं वे हुकूमत बनावें। इसका मतलब यह होगा कि पाकिस्तान में वे निकम्मे बन जाते

हैं, दीवाना बन जाते हैं, ऐसे ही हम भी यहाँ दीवाना बनें। हम चाहें तो ऐसा कर सकते हैं। मेरा एक दोस्त है, उसको मैं गाली देता हूँ, तो वह मुझको दो गाली दे, वह ठीक है। वह गाली देता है, उसे सहन कर लिया, तो वह कहाँ तक गाली देगा। मारता है, वह भी मैं सहन कर लेता हूँ। मैं उसको मुक्के के सामने मुक्का नहीं देता हूँ। तब पीछे क्या होता है? आपने देखा है? मैंने तो देखा है, कि कोई आदमी ऐसा हवा में मुक्का मारता है तो उसके हाथ टूट जाते हैं। तो बाक्सिङ्ग करता है, वह भी रुई का मोटा तना गद्दा सा होता है, उस पर मुक्का चलाता है, तब तो उसको कुछ लज्ज़त आती है। लेकिन अगर बाक्सर कोइ चीज़ सामने नहीं रखता है, तो वह निकम्मा बन जाता है और कुछ नहीं कर सकता है। मैंने तो आपको सनातन सत्य बतला दिया। मैं उस पर अकेला कायम हूँ। लोग तो आज उस पर नहीं चल रहे हैं। मैं आख़िर तक उस सत्य पथ पर पड़ा रह सकूंगा कि नहीं, यह तो ईश्वर ही जानता है। मैं तो आज सीधी बात करता हूँ कि जो बाहर चले गये हैं, उनको बाहर रहने दें। लेकिन बाहर रहते हैं, पीछे उनको खाना-पानी तो देना है। चूंकि वे बाहर चले गये हैं, उनको भूखों रहने दें और उनको कहें कि तुम पाकिस्तान भाग जाओ, ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा करके हम लड़ाई का सामान तैयार करते हैं। कांग्रेस हुकूमत अगर वह हुकूमत सचमुच देश की सेवा करने के लिए है, पैसों के लिए नहीं है, सत्ता के लिए नहीं है, लेकिन सबकी ख़िदमत करने के लिए है—एक क़ौम की नहीं, दो क़ौम की नहीं, सबकी है। अगर वे ख़िदमत करते हैं, और लोग बिगड़ते हैं और उन्हें ख़िदमत करने नहीं देते तो उन्हें हट जाना है, पीछे जो लायक हैं, जो हिन्दुस्तान में हिन्दुओं को ही रखना चाहते हैं, वे उनकी जगह लें, हुकूमत में। वह हिन्दू धर्म को डुबोने वाली चीज़ होगी, हिन्दुस्तान को भी डुबोने वाली चीज होगी। पाकिस्तान को हम छोड़ दें। वह जो कुछ भी चाहें करें। हम तो हिन्दुस्तान को ही देखें। उसका नतीजा यह आ जाता है कि सारी दुनिया हमारी तारीफ़ करेगी हमारे साथ होगी। नहीं तो दुनिया जो अबतक भारत की ओर देखती आयी है, अब उसकी ओर देखना बन्द कर देगी। वे मानते थे कि हिन्दुस्तान एक बड़ा मुल्क है, उसमें अच्छे आदमी रहते हैं, वे बुरे होने वाले नहीं। यह विश्वास ख़त्म हो जायगा। आपको इस तरह से करना है तो कर सकते हैं। लेकिन जबतक मेरे सांस में सांस है, तबतक मैं सब को सावधान करता ही रहूँगा और सबको कहता रहूँगा कि अगर इस तरह से करोगे, तो इसमें से कोई भलाई निकलने वाली नहीं है।

★ ★

मुद्रक : यूनाइटेड प्रेस, दिल्ली